रात्रि क्लास 14-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

सभी बच्चे शिव बाबा की याद में बैठे हैं। क्योंकि शिव बाबा को याद करने से शिव बाबा का वरसा नई दुनिया की बादशाही। जितना जो बाप को याद करते हैं उतना ही पाप कटते हैं। यहां भी जब आकर बैठते हैं तो नये को नहीं बिठाया जाता है। उनको पहले लेशन दिया जाता है। जब वह समझ लेते हैं तब बिठाया जाता है। स्कूल है ना। यह है मनुष्य से देवता बनने का स्कूल। कबसुना ही न होगा कब पढ़ा ही न होगा तो इस स्कूल में बैठने से कुछ समझेंगे ही नहीं। पहले आकर लायक बनें फिर बैठें तो कुछ बुधि में बैठे। यह स्कूल ऐसे हैं जैसे कोई ब्रह्माकुमारियां ही पढ़ती हैं उनमें भी नम्बरवार होते हैं। कोई स्कालरशिप लेते। कोई फेल भी हो जाते हैं। यहां भी ऐसे ही हैं। कोई तो स्कालरशिप ले यह बन जावेंगे। अगर नहीं पढ़ेंगे तो भील बन जावेंगे। दास दासियां भी बन जावेंगे। तो जब मेहमान आते हैं उनको जब तक समझाया न है वह मुरली से कुछ समझ न सकेंगे। शिव बाबा को याद में जो बैठते हैं तो पाप कटते हैं। याद में न बैठे तो पाप ही नहीं कटते। न समझते ही हैं। यहां कायदे मुजीब कोई पतित रह नहीं सकते हैं। यहां जो आते हैं उन से पूछा जाता पापावन कब से बन रहे हो। 6 मास का पवित्र रहने वाला भी कच्चा कहा जावेगा। ऐसे को लाने का हुकुम नहीं है। अपवित्र यहां रह न सके। यह हैं सभी ब्राह्मण के कुल के। बाहर में सभी हैं शुद्र कुल के। ब्राह्मण कुल चोटी है सभी से उच्च। जो फिर पवित्र बनकर फिर जाकर देवता बनते हैं। यह है ईश्वरीय पढ़ाई। उनको समझाना चाहिए। जिनको पता ही नहीं होगा मनुष्य से देवता बनना क्या होता है वह तो कुछ समझ नहीं सकेंगे। नये बच्चों को पहले समझाना चाहिए। सात दिन का कोर्स लेना पड़े। इसमें पवित्रता है मूल बात। विकार के लिये संकल्प भी न आना चाहिए। विकारों पर जीत होगी तब ही उच्च पद पायेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।

रात्रि क्लास 17-10-68 :-

********** जैसे रूहानी बाप बच्चों को समझाते हैं कि काम काज धंधा आदि करते बुधि से ऐसे समझो हम बाबा को याद करते रहते हैं। पहले से जैसे मालूम होता है हमको बाहर जाना है। बुधि में रहता है। काम भी करता रहेगा बुधि में रहेगा जहां जाना है। वैसे तुम बच्चों को भी अपने बाप को, शान्तिधाम सुखधाम को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना ही पक्का होता जावेगा। पक्की अवस्था हो जावेगी। और दैवी गुणों का भी ध्यान रहेगा। यहां रहते हो तो भी जानते हो पुरानी दुनिया से वैराग्य है। बुधि में है जो कुछ देखते हैं यह पुरानी दुनिया है। नई दुनिया याद पर है रही है। अभी जाने का है। यहां तो रहना न है। यहां तो रहना न है। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। दैवी गुण भी धारण करनी है जरूर। वर्णन भी करते आये हो इनकी महिमा और अपनी ग्लानी। भक्ति मार्ग में अनेक भूलें हुई हैं। बाप ने समझाया है ज्ञान है दिन। भक्ति है रात फिर है सारी दुनिया का वैराग्य। तुम नई दुनिया में जाते हो। यह बच्चों को मालूम हो गया है। चक्र में पार्ट बजाने आते हैं परन्तु पत्थर बुधि ऐसे हैं जैसे कि समझते ही नहीं हैं। पहले2 बाप की ताकत थी। समय भी ऐसा था। ड्रामा में पार्ट था। जो पास्ट हुआ सो एक्युरेट ड्रामा हुआ। फिर यह कुछ भी तुमको याद न रहेगा। अभी तुम समझते हो जो कुछ हुआ घर-बार आदि छोड़ा सभी ड्रामा अनुसार ही हुआ। पहले यह ज्ञान न था। अथाह ज्ञान है। मास दो में नहीं मिल सकता। जो जीना है ज्ञान लेना है। जब तक जीते हो। नालेज धारण कर आत्मा साथ ले जावेगी। तुम जानते हो हम आत्मा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार संस्कार ज्ञान की ले जाती हैं। फिर जब आते हैं तो यह भूल जाते हैं। नशोनरी ड्रामा की चलती रहती है। प्रलय होती ही नहीं। बच्चों की बुधि में है यह हार और जीत का खेल है। लाखों वर्ष की बात तो बुधि में आ भी न सके। बाप ने समझाया है यह 5000 वर्ष की बात है। लाखों वर्ष का कितना विस्तार हो जाये। जब जब प्रदर्शनी आदि में समझाते हो तो पहली बात गीता का भगवान कौन? गाड इज वन। जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनको सर्वव्यापी कहा नहीं जा सकता। सेन्सीबुल होकर समझाओ। गीता का भगवान कौन? कृष्ण तो देहधारी था। सतयुग का प्रिन्स था। भगवान तो प्रिन्स था नहीं। भगवान तो आते ही हैं—

17.10.68

परमधाम से। बाप का नाम एक ही चला आता है। भक्ति-मार्ग में बहुत नाम डाल देते हैं। नहीं तो असली नाम शिव ही है। शिव बाबा भगध देश में आते हैं। आबू में ही आकर सर्व की सदगति करते हैं। जो भी लिटरेचर हो उसमें यह ठपा लगा देना चाहिए। जैसे सर्व शास्त्रमइ शिरोमणि गीता है वैसे यह वर्ल्ड का सर्वोत्तम तीर्थ आबू ही है। क्योंकि परमपिता परमात्मा ने आकरसर्व पतितों को पावन बनाया है। सर्व को लिबरेट किया है। सर्व को मुक्ति जीवनमुक्ति में ले गये। इसमें सभी आ जाते हैं। बच्चों की बुधि में है इस समय जो भी मनुष्य मात्र हैं एक जैसे फीचर्स कब होते ही नहीं। ऐसे थोड़ेही हर 5000 वर्ष बाद फीचर्स नये बनेंगे। यह तो वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी अनादि रिपीट होती ही रहती हैं। मीठे2 बच्चों को खुशी भी होनी चाहिए। और याद की यात्रा में विघ्न जरूर पड़ेंगे। घड़ी2 बुधि का योग टूट जावेगा। बाप की याद में हा विघ्न पड़ेंगे। तूफान आवेंगे माया बिल्ली हरा लेगी। तुम बच्चे आये हो विश्व का राज्य लेने। परन्तु माया बिल्ली घाटा डाल देती हैं। आश्चर्यवत भागन्ति हो जाते हैं तो फिर नालेज सभी भूल जाते हैं। म्युजियम में कितने ढेर आते हैं। थोड़ा भी सुनते हैं तो स्वर्ग में जाते हैं। सजाएं बहुत खानी पड़ती हैं। टाईम बहुत थोड़ा लगता है। जैसे काशी कलट खाते थे। अभी बंद हो गया है। मुक्ति के लिये जो घात कर देते हैं। आत्मा का घात तो होता ही नहीं। शरीर का करते हैं। तो थोड़े ही समय में पाप सभी भोग लेते हैं। थोड़ा हीटाईम में पापों को अथाह भोगना की वासना आती है। भक्ति मार्ग में पाप तो होते ही हैं। कदम2 पर पाप तो होते ही हैं। कदम2 पर घाटा होता है। इस समय तुम्हारे कदम2 में कमाई है। यह है गुप्त। कहा जाता है गुप्त दान महाकल्याण। गुप्त दान को महापूण्य कहा जाता है। शिव बाबा पास जमा हुआ आत्मा जाने परमात्मा जाने। दूसरे को बताने की दरकार ही नहीं। बताने से ताकत कम हो जाती हैं। तीसरे को बताने की दरकार ही नहीं। गुप्त। ब्रह्मा तो है ट्रस्टी। जितना गुप्त करेंगे उतना ही बहुत अच्छा है। है भी थोड़ा टाईम। फिर पैसे की दरकार ही न रहेगा। क्या करेंगे। बहुत बड़े2 घर के आये थे पैसे कुछ नहीं लाये थे। फिर भी उच्च पद पाते हैं।

यह भी जानते हो खूनी नाहक खेल होना है। किसको दोष थोड़ेही हैं। बम्स गिरेंगे यह होगा। तुम बच्चों के लिये गाया हुआहै मिरवा मोत ... तुमको जरा भी फिकरात नहीं होनी। न कोईडर होना चाहिए। देवीगुण भी धारण करनी है। कोई अशान्ति न होनी चाहिए। अशान्ति होती है तो क्रोध के कारण। फिर सोणा पाप होते रहते हैं। क्रोध में पूरे पक्के हो जाते हैं। वैसे लोभ में मोह में भी पक्के हो जाते हैं। आदत जाती ही नहीं। हीरे जैसा जन्म तुम्हारा अभी संगम पर हैं। इसलिये बाबा कहते हैं कायदे अनुसार शरीर को चलाना है। लोभ में भी नहीं जाना है। यह कमाई भी है सच्ची। ज्ञान रत्न है ना। इनकी वैल्यु कोई कथन कर न सके। इसलिये बच्चों को रहना चाहिए। बाप हमको पढ़ाते हैं। स्वर्ग के मालिक हम बन रहे हैं। पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना चाहिए। गफलत ठीक नहीं। हठयोग भी नहीं करना है। कायदे सिरे शरीर को चलाना है। हठ नहीं। सहज नालेज है ना। हम आत्मा हैं बाप को याद करनाहै। इन चित्रों की भी फिर दरकार नहीं रहेगी। यह तो जैसे छोटे बच्चों को समझानाहोता है।

यह है ईन्द्र सभा जहां ज्ञान की वरसा होती है। शिव बाबा थोड़ेही शास्त्र आदि पढ़कर सुनाते हैं। वह कब शास्त्र थोड़ेही पढ़ा है। मूलवतन में शास्त्र कहां से आई। उनको कहा जाता ही जाता है नालेज-फुल। ब्लीस फुल। कोई भी बात में मुंझना नहीं हैं। बाप खुद कहते हैं मुझे पतित-पावन कहते हो। मुझे याद करो तो सभी पापभस्म हो जावेंगे। देवी गुण भी धारण करनी है। चक्र फिरता रहे तो पाप कटता रहे।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।